Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 GISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

# भवभूति के काव्यों में नारी चित्रण

**डॉ० संजीव कुमार**
**प्रवक्ता (हिन्दी)**
**शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार, भारत।**

**सारांश –** संस्कृत साहित्य में भवभूति का स्थान कालिदास के उपरान्त आता है। भवभूति वैदिक परम्परा के अनुयायी एवं विविध शास्त्रों के प्रकाण्ड ज्ञाता थे। उन्होंने अपने काव्यों में नारी के कोमल हृदय की भावना का चित्रण किया है जो सहृदयों को हठात् अपनी ओर आकर्षित किया है।

**प्रमुख शब्द –** नारी, मालतीमाधव, प्रेम-प्रसंग, संवेदना, नायिका, उत्तररामचरित, महावीरचरित।

---

श्रेष्ठ नाटककारों में कालिदास के उपरान्त अष्टम शताब्दी में भवभूति का स्थान आता है। उन्होंने तीन रूपकों का प्रणयन किया, जिनमें नारियों के मुग्ध स्वभाव, स्नेह-पल्लवन, वैवाहिक कूटनीति और शाश्वत अनुराग अतिशय मुखर हुए हैं।

बेल्वल्कर [(1)] के इस विचार से प्राय: सभी विद्वान् सहमत हैं कि भवभूति का मालतीमाधव प्रकरण उनकी आत्मकथा का ही नाटकीय रूपान्तरण है। साँवले रंग के भवभूति विदर्भदेशीय राजमंत्री के पुत्र थे। वे पद्मावती (ग्वालियर के समीप पवाया) आकर विद्याध्ययन और वैवाहिक प्रेम-प्रसङ्ग में तल्लीन हो गए तथा अपनी पारदर्शी संवेदनाएँ मालती-माधव आदि रूपकों में अभिव्यक्त किया। रावण के पौराणिक चरित्र तथा नन्दन, भूरिवसु के प्राकरणिक चरित्रों के बीच लोकापवाद से घुटते हुए स्त्री-स्वाभिमान को बचाने के लिए उन्होंने अपनी लेखनी चलाई।

उन्होंने अपने छात्र जीवन में विद्याध्ययन एवं प्रेम-प्रसंगों की कोमल संवेदनाओं का भावुक चित्रण अपनी रचनाओं में किया है।

उदाहरणस्वरूप निम्न प्रसंग द्रष्टव्य है –

**परिच्छेदव्यक्तिर्न भवति पुर:स्थेऽपि विषये**
**भवत्यभ्यस्तेऽपि स्मरणमतथाभावविरसम्**
**न सन्तापच्छेदो हिमसरसि वा चन्द्रमसि वा**
**मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च।** [(2)]

भवभूति के अपमान से उनके जीवन में निराशा के भाव उत्पन्न हुए थे; जिसका संकेत उन्होंने मालतीमाधव की प्रस्तावना में किया है–

**ये नाम केचिदिह न: प्रथयन्त्यवज्ञां**
**जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्न:।**
**उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा**
**कालो ह्यं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।।** - 1.6

महाकवि ने अपने रचना-संसार में कन्या, कामिनी, अर्द्धाङ्गिनी, देवी, विहारदासी, कुट्टनी, पिशाची, कापालिकी और सती-असती नारियों के अनेक चित्र अङ्कित किए हैं। यहाँ कामसूत्र के निर्देशवश कन्याएँ ही नहीं अपितु साध्वी बनी प्रौढ महिलाएँ भी घर से दूर जाकर विद्याध्ययन करती वर्णित हैं।(2) कोई स्त्री दौत्यकर्म करती और कोई योगसिद्धि पाकर आकाश में उड़ती हैं। नायिकाओं अथवा आदर्शनारियों की निम्नाङ्कित विशेषताएँ अधिक भास्वर बन पड़ी हैं-

नवयौवनाओं का चातुर्यहीन सौन्दर्य मुग्धा नायिकाओं में होता है। भवभूति की नायिकाएँ प्रौढा होकर भी इस गुण का परित्याग नहीं करतीं। नायिका सीता विवाह, वनवास, परित्याग और पुन: ग्रहण के क्षणों में भी स्वभावत: मुग्धा ही बनी रहती हैं। सरस कदलीगर्भ सी कोमल मालती अत्यन्त उद्वेगजनक क्षण में भी मुग्धता के कारण केवल तीन ही वाक्य अनेक बार बोलती हैं-

**कथमुपहारीकृतास्मि राजस्तातेन। राजाराधनं खलु तातस्य गुरुकम्, न पुनर्मालती।हातात त्वमपि मम नाम, एवमिति सर्वथा जितं भोगतृष्णया?** (3)

महावीरचरित की सीता में इतनी मुग्धता है कि अयोध्या लौटने को पुष्पक पर चढ़कर भी वे पूछती हैं- **अस्माभि: साम्प्रतं क्व प्रस्थीयते?** (4)

वस्तुत: पहले से कही जा रही नारियों की पुष्प जैसी कोमलता भवभूति द्वारा कई बार रेखाङ्कित की गई है-

**कुसुमसमधर्माणो हि योषित:।** (5)
**पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति।** (6)
**नैसर्गिकी सुरभिण: कुसुमस्य सिद्धा**
**मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि।** (7)
**नैसर्गिकी सुरभिण: कुसुमस्य सिद्धा**
**मूर्ध्नि स्थितिर्न मुसलैर्बत कुट्टनानि।** (8)

## प्रेम-प्रसङ्ग का चित्रण

कहीं कहीं कामिनियों के बरबस प्रेम प्रसङ्ग भवभूति के नाटकों में प्राप्त होते हैं, जैसे-कटाक्ष निरीक्षण, अर्धरात्रि के उत्सव में सुरापान और चिन्तन में प्रिय-समागम का अनुभव। कवि की मान्यता है कि दो हृदयों के मेल से उत्पन्न होने वाल प्रेम स्वाभाविक और स्वार्थरहित होता है-

**हृदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम्। (9)**

**वैवाहिक कूटनीति के प्रसङ्ग -** चिरण्टी कामिनियों के विवाह–निर्धारण में विविध क्लेश, निराशा, छल और कलह होते हैं। महावीरचरित में वैवाहिक बदले की भावना से राम के वनवास की कुटनीति रावण–पक्षीय दुरभिसन्धि का पहली बार साहित्य में वर्णन हुआ है। यहाँ शूर्पणखा मन्थरा के शरीर में प्रवेश कर सिद्धाश्रम पहुँचती और कैकेयी का कृत्रिम पत्र दिखाकर राम को सीता और लक्ष्मण के साथ वन निर्वासित करा देती है। वन में राम को देखकर वह शृङ्गारोन्मुख होती है। शूर्पणखा की राम में आसक्ति एवं राम के द्वारा विवाह की अस्वीकृति एवं लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नासिका काटे जाने के उपरान्त की घटनाओं के परिणामस्वरूप राम–रावण युद्ध एवं सीता – निर्वासन की घटना घटित होती है।

मालतीमाधवम् नाटक में नायिका मालती युवा माधव से प्रेम करती है, पर उसका पिता राजाज्ञा–वश उसे अधेड़ वय के नन्दन से विवाह करना चाहता है। राजाज्ञा बदलवाने की प्रक्रिया में अनेक विचित्र घटनाएँ घटती हैं; यथा – बाघ से लड़ाई, मालती के बलिदान का उपक्रम, नरमांस का विक्रय, स्त्री बने पुरुष से पुरुष का विवाह, आत्महत्या की चेष्टा, अघोर साधना, परिवर्तित वेष वाली कन्या, वर का मिलन और युद्ध आदि। यह सरस, अद्भुत और चटख सन्दर्भों का प्रकरण सचमुच भवभूति की अनुभूत जीवनी के समान है।

**शाश्वत अनुरागवती नायिकायें -** महाकवि की नायिकाएँ एक जन्म ही नहीं, हर जन्म साथ रहने वाले शाश्वत अनुराग का प्रतिनिधित्व करती हैं। जो पास रहकर विकसित कमल के आभ्यन्तर स्पर्श का सुख देती, आंगन की लक्ष्मी, आँखों की अमृत शलाका और अङ्गों में चन्दन–लेप सी प्रतीत होती हैं, वे ही दूर जा कर पति को ऐसे अनुभव देती हैं मानो उसका हृदय प्रचण्ड अग्नि में संतप्त हो रहा है, शरीर लकड़ी का बन गया है और संसार उजड़े जंगल हो गया है। इस प्रसंग में मालती की कामना का वर्णन पठनीय है –

**माधव! परलोकगतोऽपि युष्माभिः स्मर्तव्योऽयं जनः।**
**न खलु स उपरतो यस्य वल्लभः स्मरति। (10)**
**सीता का दृढ विश्वास अवलोकनीय है-**
**स्थिरप्रसादा यूयम्, इत इदानीं किमपरम्? (11)**

उत्तररामचरित के तृतीय अंक में राम के स्पर्श से पुलकित अदृश्य सीता में स्वेद, रोमांच और कम्पन के अनुभाव प्रकट होने पर कवि उसकी तुलना करते हुए कहते है कि वह वायु से हिलायी गई, जलबिन्दुओं से सिक्त तथा स्फुट कलिकाओं से युक्त कदम्ब की डाली के समान प्रतीत हो रही है –

**सस्वेद-रोमाञ्चित-कम्पिताङ्गी जाता प्रियस्पर्शसुखेन वत्सा।**
**मरुन्नवाम्भः प्रतिधूतसिक्ता कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव॥ (12)**

जीवन के उत्तरार्ध में शैव मान्यताओं के साथ कन्नौज में रहते हुए इस स्त्री विषयक जिस शाश्वत संवेदना का भवभूति को ज्ञान प्राप्त हुआ, वह आज तक साहित्य मर्मज्ञों के लिए स्मरणीय है।

कुल मिलाकर भवभूति संस्कृत भाषा के अमर कवि एवं नाटककार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा करूण रस के साथ साथ नारी के कोमल भावनाओं के चित्रण में सफल रहे हैं। भगवान् राम को सीता के वियोग में व्याकुल दिखाना वस्तुत: सीता की अपूर्वता है। इसप्रकार हम करूण में भी नारी के कोमल सौन्दर्य की कल्पना कर सकते हैं।

## सन्दर्भ सूची

1. S. K. Belvalkar, Rama's Later History. Introduction P.XXXVII
2. मालतीमाधव 1.32
3. मालतीमाधव पृ० – 108
4. महावीर० पृ० 305
5. मालती० पृ० 308
6. उत्तर० 4.12
7. उत्तर० 1.14
8. मालती० 9.51
9. उत्तर० 6.32
10. मालती० पृ० 237
11. उत्तर० पृ० 87
12. उत्तर० 3.42